

सम्पादकीय

वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन के कुप्रभाव तमाम तरह से सामने आ रहे हैं। बढ़ता तापमान पिघलते ग्लेशियर, समुद्र का निरन्तर बढ़ता जलस्तर, मानव सहित पशुओं पर पड़ने वाले प्रभावों का विशेष तौर पर उल्लेख किया जा सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार जलवायु परिवर्तन से कृषि सर्वाधिक प्रभावित हो रही है। कृषि के लिए सिंचाई जल की कमी, खरपतवार वृद्धि तथा कीटों एवं रोगों के बढ़ते प्रकोप आदि के कारण विभिन्न प्रकार की फसलों की उत्पादकता एवं उपज में गिरावट आ रही है। यह वास्तविकता है कि भारत में कृषि काफी हद तक मानसून एवं मौसम बदलाव पर निर्भर है। अध्ययन से यह पता चला है कि गत 50 वर्षों से तापमान में जलवायु परिवर्तन के कारण औसतन 1.2 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी प्रत्येक दशक में हो रही है। जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाली बारिश में अनियमितता देखी जा रही है। वर्षा के रुझान में परिवर्तन से अल्पकालिक फसलों पर बुरा असर पड़ता है और जल उपलब्धता में कमी आती है। जल संसाधनों में निरन्तर हो रही कमी की चुनौती का समय रहते सामना नहीं किया तो भविष्य में जल संकट जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाएगी।

कृषि मूलश्र जीवनम्

आज हमें छोटे छोटे पोखरों और तालों को बचाने की आवश्यकता है। खेती भूमि प्रबंधन, ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई, मेंढ बंदी, भू समतलीकरण, कम अवधि के फसलों का चयन, फसल चक्र, जैविक खाद का उपयोग, उन्नत किस्म, मिश्रित खेती आदि कृषि प्रथाओं में बदलाव और नवाचार को अपनाने की आवश्यकता है जिसे वर्षा जल का समुचित उपयोग हो पाए।

जल बर्बादी रोकने की दिशा में काफी कुछ किये जाने की गुंजाइश है। सीमित जल संसाधनों को सुरक्षित रखना और खेती, उद्योग तथा बढ़ती आबादी के लिए शुद्ध जल की उपलब्धता सुनिश्चित करना आज भी चुनौती से कम नहीं है। समय आ गया है कि आम जन भी इसमें अपना योगदान दें और पानी की एक एक बूंद को भविष्य हेतु संरक्षित करें। मुझे विश्वास है कि परिवर्तन कृषि संदेश के 21वें अंक का प्रकाशन कृषक, प्रसार कार्यकर्ताओं तथा कृषि से जुड़े लोगों के लिए उपयोगी साबित होगा।

- विवेक कुमार

अधिक आय का स्रोत सब्जी की खेती

खाद्यान्न उत्पादन में अब संतुलित पोषण की आवश्यकता को महत्व दिया जाने लगा है। भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में सब्जियों का महत्व और भी बढ़ जाता है। कुल जनसंख्या के आधार पर संतुलित पोषण की दृष्टि से सब्जियों का उत्पादन देश में काफी कम है। उन्नत उत्पादन तकनीकों द्वारा आमदनी होती है। इस उद्देश्य के साथ परिवर्तन परिसर में दिनांक 11/01/2024 को सब्जी उत्पादन का सफल प्रशिक्षण आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में 30 महिला एवं पुरुष किसानों की भागीदारी रही। यह प्रशिक्षण बदलते मौसम में खेती को और अधिक लाभकारी बनाने के लिए किया गया। किसान कृषि विविधकरण अपनाकर, फसल चक्र में सब्जी को समाहित कैसे करें, सब्जी की वैज्ञानिक खेती कैसे करें, मौसम के अनुसार प्रयोग में आने वाली सब्जियां, उनकी उन्नतशील प्रजातियां कैसे उगायें, सब्जी फसलों में लगाने वाली कीट व्याधि नियंत्रण कैसे करें इन सब की जानकारी और बाजार मांग



और बिक्री के बारे में और विस्तृत जानकारी दी गयी। परिवर्तन परिसर में गरमा सब्जियों का प्रदर्शन का भ्रमण भी किया गया। संरक्षण विधि से लगाये गये पोली हॉउस में टमाटर की फसल को दिखाया गया। प्रशिक्षण के बाद सभी किसानों ने पोषक वाटिका से शुरुआत कर सब्जी उत्पादन की बात कही और योजना भी तैयार की।

परिवर्तन किसान मेला

परिवर्तन परिसर में 9 फरवरी 2024 को किसान मेला सह कृषि प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस किसान मेला का आयोजन मोटा अनाज, नाम एक - काम अनेक, विषय पर केन्द्रित था। आयोजित किसान मेला में 1000+ किसान और कृषि संस्थान, कृषि विभाग, बीज कंपनी पौधा रक्षा कंपनी, बैंक, सहकारी समिति, स्वयं सहायता समूह, कृषि यंत्र आदि कृषि से जुड़े सैकड़ों प्रतिष्ठानों ने भाग लिया। इस किसान मेला का शुभारम्भ

भारत मौसम विभाग पटना के वैज्ञानिक, आशीष कुमार और डा. अजय कुमार सीसा, टी एन पांडेय, - हार्वेस्ट प्लस एवं प्रगिशील किसान द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर शुरू किया गया। किसान मेला के शुभारम्भ के पश्चात मोटे अनाज टांगून (कंगनी) से बनी खीर सभी किसानों को खिलाई गयी। किसान मेला के अवसर पर किसान गोष्ठी का भी आयोजन किया गया जिसमें मोटा अनाज और बायोफोर्टीफाईट फसलों के उत्पादन और

इसके पोषण महत्व के बारे में जानकारी दी गयी। भारत मौसम विभाग पटना के वैज्ञानिक डा. आशीष कुमार ने जलवायु परिवर्तन का कृषि पर प्रभाव और समाधान पर किसानों के साथ चर्चा की। कृषि में बढ़ती लागत को कम करने हेतु कृषि यंत्रीकरण उपयोगिता और लाभ की जानकारी कृषि वैज्ञानिक डा. अजय कुमार द्वारा प्रदान की गयी। इस किसान मेला में आये हुए किसानों ने कृषि इनपुट फल और फूलों के पौधों की खरीदारी भी की।



प्रक्षेत्र दिवस

किसानों को खेती से कैसे अधिक लाभ प्राप्त हो इसके लिए परिवर्तन की कृषि इकाई, हर संभव प्रयास करती है। साथ ही साथ जलवायु के अनुकूल खेती कैसे करें और फसल चक्र को अपनाएं जिससे फसलों की उत्पादकता के साथ-साथ आर्थिक लाभ एवं मिट्टी की उर्वरता शक्ति में सुधार होता रहे, इसके लिए भी परिवर्तन कृषि इकाई किसानों के खेतों में फसलों की नयी प्रजाति और नयी विधि का

प्रदर्शन आयोजित करती है। इस प्रजाति और विधि प्रदर्शन का विस्तार और प्रसार हो इसके लिए किसानों के खेत पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया जाता है जिससे अन्य किसानों के खेत में लगे प्रदर्शन और विधि को सजीव रूप से देखने का अवसर प्राप्त होता है और किसानों के मन में चल रही शंकाओं का समाधान हो।

इसके लिए परिवर्तन कार्यक्षेत्र के विभिन्न गांवों

में कृषि प्रक्षेत्र दिवस सह किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस आयोजन में सरसों, मसूर, गेहूँ की वैज्ञानिक पद्धति से खेती करने के तरीकों के पर चर्चा और जानकारी प्रदान की गयी। उपस्थित किसानों को परिवर्तन के तकनीकी हस्तक्षेप से लगाई गयी फसल प्रदर्शनी में ले जाकर उनके अगल बगल के खेत से तुलनात्मक चर्चा भी की गयी।



हराचारा का उत्पादन है जरूरी

घटते चारागाहों और बदलते मौसम के कारण गर्मी के दिनों में पशुपालक किसानों के समाने हरा चारा की समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। रबी सीजन में किसान पैसा लेकर भूसा मशीन के पीछे पीछे घूम रहे हैं फिर भी पर्याप्त मात्रा में भूसा नहीं मिल पा रहा है। मार्च और अप्रैल माह में परिवर्तन कृषि इकाई ने व्यक्तिगत सम्पर्क और बैठकों के माध्यम से पशुपालक किसानों को भूसा पर निर्भरता कम करने और वर्ष भर हरा चारा के उत्पादन की सलाह दी। किसानों

को बतलाया जा रहा है कि जिस प्रकार हम अनाज का उत्पादन करते हैं उसी प्रकार एक या दो कठु में हरा चारा का वर्ष भर उत्पादन करें जिससे भूसा पर निर्भरता भी कम होगी और साथ ही हरा चारा खिलाने से दुग्ध उत्पादन भी बढ़ेगा। पशुपालक किसान को यह भी बतलाया जा रहा है कि परिवर्तन किसान सेवा केंद्र में अनेक हायब्रिड चारा की प्रजातियां आ गयी हैं जिसकी एक बार बुआई के उपरांत उनके बार कटाई भी की जा सकती है।



खरीफ कार्यशाला

दिनांक 16/05/24 को परिवर्तन परिसर में खरीफ कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम को आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में कुल 62 किसानों की भागीदारी रही। इस कार्यशाला में आगामी खरीफ सीजन में जलवायु अनुकूल खेती की तैयारियों को लेकर किसानों के साथ चर्चा की गयी साथ ही साथ कार्यशाला में धान, अरहर, मक्का, हल्दी, मोटे अनाज- रागी, मडुआ, बाजरा तथा जलवायु के अनुकूल फसलों की

वैज्ञानिक तरीकों से खेती कैसे करें, इसकी जानकारी साझा की गयी।

आज के समय में बढ़ती कृषि लागत को हम कैसे कम कर पाएं, इसके लिए इस कार्यशाला में उपस्थित किसानों को छोटे पावर वीडर और पावर टिलर को सजीव रूप से दिखाया गया। छोटे सीमांत किसानों के लिए यह यंत्र बहुत ही लाभकारी है। रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध इस्तेमाल को कम करने हेतु किसानों को मिट्टी जाँच के उपरांत उर्वरक

दिए जाने की सलाह दी गयी। इस कार्यशाला के अवसर पर परिवर्तन किसान सेवा केंद्र द्वारा उपस्थित किसानों से आवश्यक कृषि इनपुट मांग को एकत्र किया गया। खरीफ सीजन की खेती में पिछले साल के अनुभव और समस्याओं के समाधान पर सामूहिक चर्चा भी हुई। इस अवसर पर धान की बुआई ड्रम सीडर और अरहर की बुआई रेज्ड बेड प्लान्टर के व्यापारिक अनुभवों को साझा किया गया।



समेकित पोषक तत्व प्रबन्धन

दिनांक 13/06/24 को ग्राम गोठी में समेकित पोषक प्रबन्धन विषय पर गोष्ठी सह प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में 68 किसानों की भागीदारी रही जिसमें महिला और पुरुष किसान दोनों शामिल रहे। इस गोष्ठी में मिट्टी परीक्षण के आधार पर ही समेकित पोषक तत्व प्रबंधन और फसल चक्र को व्यवहारिक तरीके से अपनाने हेतु प्रोत्साहित किया गया। इस गोष्ठी के तकनीकी सत्र में किसानों को धान की खेती हेतु जमीन के अनुसार बीज का चयन, नर्सरी गिराने का तरीका, मौसम में उतराव

चढ़ाव के दौरान नर्सरी प्रबन्धन और उचित रखरखाव की जानकारी दी गयी। पौधों में आवश्यक पोषक तत्व की उपयोगिता, महत्व दिए जाने का समय आदि की जानकारी भी साझा की गयी। परिवर्तन किसान सेवा केंद्र FPO की जानकारी और किसानों को दिए जाने वाली सेवाओं के बारे में और किसान सेवा केंद्र FPO से अंशधारक के रूप में जुड़ने की जानकारी दी गयी।

उपस्थित ग्रामीणों ने बतलाया की गाँव के अधिकतर लोग खेती से जुड़े हुए हैं और यहाँ

पर सब्जी उत्पादन किसान अधिक संख्या में हैं। इस गाँव में सब्जी फसलों को जंगली जानवर नील गाय द्वारा काफी नुकसान पहुंचता है। नील गाय से फसलों के बचाव हेतु परिवर्तन के हस्तक्षेप से समाधान पर चर्चा हुई। इसके समाधान हेतु झटका मशीन लगाने की सलाह दी गयी। इप्फको के सहयोग से नैनो तरल उर्वरक को ड्रोन की सहायता से सजीव स्प्रे का प्रदर्शन कराया गया। भविष्य में ड्रोन से किये जाने वाली खेती की संभावनाओं की जानकारी साझा की गयी।



ईगल सीड्स

बदलती जलवायु के अनुसार किसानों को अपनी कृषि पद्धति और प्रजाति चयन में समय समय पर बदलाव की आवश्यकता पड़ती है। कृषि में सिर्फ अच्छे बीज लगाने से 20 प्रतिशत तक ही उत्पादन में बढ़ोत्तरी होती है। कृषि क्षेत्र में कार्यरत ईगल सीड्स, इंदौर, के सहयोग से परिवर्तन कार्यक्षेत्र में क जलवायु के अनुसार बेहतर प्रजातियों के चयन हेतु किसानों के खेत पर प्रक्षेत्र प्रदर्शन का आयोजन किया गया।



धान बीज वितरण

परिवर्तन कृषि इकाई, महिला समाख्या तथा भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान क्षेत्रीय केंद्र, पूसा ने मिलकर केंद्र सरकार द्वारा संचालित अनुसूचित जाती उप परियोजना के तहत अनुसूचित जाती के महिला, पुरुष किसानों के बीच, बीज वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस

कार्यक्रम के तहत धान की नवीन उन्नत प्रजाति पूसा 44, PNR 381, सुगन्ध 5, अरहर पूसा 151 एवं मुंग प्रभेद पूसा विशाल बीज को 600 किसानों के बीच वितरित किया गया। बीज वितरण के दौरान उपस्थित किसानों को खेती की नवीनतम तकनीकों की जानकारी दी गयी।



किसान भाई - खेती में निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दे

रबी मक्का की वैज्ञानिक खेती -

मक्का, एक प्रमुख खाद्य फसल है जो मोटे अनाज की श्रेणी में आता है। इसे भुटे की शकल में भी खाया जाता है। मक्का खरीफ ऋतु की फसल है परन्तु जहाँ सिंचाई के साधन हैं, वंहा रबी और खरीफ की अगेती फसल के रूप में ली जा सकती है। मक्का कार्बोहाइड्रेट का अच्छा स्रोत है। यह एक बहुपयोगी फसल है व मनुष्य के साथ साथ पशुओं के आहार का प्रमुख अवयव भी है। औद्योगिक दृष्टिकोण से इसका महत्वपूर्ण स्थान है। मक्का से वर्तमान में प्रोटीनेस, चाकलेट, पेंट्स स्याही, लोशन स्टार्च, कोका - कोला तथा कार्न सिरप बनने लगा है। बेबीकार्न मक्का तो सब्जी उपयोग के लिए बहुत प्रसिद्ध हो गया है।

जलवायु एवं भूमि -

मक्का उष्ण एवं आद्र जलवायु की फसल है इसके लिए ऐसी भूमि जहाँ पानी का निकास अच्छा हो उपयुक्त होती है।

बुआई का समय - अक्टूबर से नवम्बर तक

किस्म - 4212, 2626, 3033,

बीज की मात्रा - 4-5 किलो प्रति एकड़

बुआई का तरीका और पौध अंतरण - बीज की बुआई मेंढ के किनारे व् उपर 3-4 सेमी की गहराई पर करनी चाहिए। बुआई के एक माह पश्चात मिट्टी चढ़ाने का कार्य करना चाहिए। बुआई किसी भी विधि से की जाए परन्तु खेत में पौधों की संख्या 22- 33 हजार / एकड़ रखना चाहिए। पौध अंतरण कतार से कतार 75 सेमी. पौधे से पौधे 25 सेमी. दूरी रखनी चाहिए।

खाद एवं उर्वरक की मात्रा -

शीघ्र पकने वाली - 82:50:30 (N:P:K)

मध्यम पकने वाली 120:60:40 (N:P:K)

देरी से पकने वाली 120 :75 :50 (N:P:K)

भूमि की तैयारी करते समय 2 से 3 टन, अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद खेत में मिलानी चाहिए तथा भूमि परीक्षण उपरांत जहाँ जस्ते की कमी हो तो वहाँ 25 किलो / हे. जिंक सल्फेट डालना चाहिए। यूरिया की मात्रा को तीन भाग में देना चाहिए। प्रथम आधार खाद के रूप में, लगभग एक माह बाद टॉप ड्रेसिंग के रूप में तीसरा भाग नर पुष्प मंजरी आने से पहले।

मक्का में खरपतवार नियंत्रण

अंकुरण से पूर्व 600ग्राम / एकड़ की दर से एट्राजिन का छिड़काव करें।

इसके 20 - 30 दिन बाद निराई गुड़ाई कर मिट्टी चढ़ावें।

मक्का के साथ अंतरवर्ती फसलें

मक्का : सेम, मिण्डी, हरा धनिया, मूली, सरसों

सिंचाई - मक्का की पूरी फसल अवधि में लगभग 400- 600 mm पानी की अवश्यकत होती है तथा इसकी सिंचाई की महत्वपूर्ण अवस्था पुष्पन और धने भरने का समय है। इसके आलावा खेत में पानी की निकासी भी अतिआवश्यक है।

पौध संरक्षण - समय समय पर पौधों की निगरानी रखें और कृषि वैज्ञानिकों से उचित परामर्श लेते रहें।

फसल की कटाई, गहाई और भंडारण - फसल अवधि पूर्ण होने के पश्चात अर्थात् बोने के 90-115 दिन बाद तथा डेन में लगभग 25 प्रतिशत तक नमी होने पर कटाई करनी चाहिए।

चना की वैज्ञानिक खेती

चना रबी सीजन में उगाई जाने वाली महत्वपूर्ण दलहन फसल है। विश्व के कुल चना उत्पादन का 70 प्रतिशत भारत में होता है। चने में 21 प्रतिशत प्रोटीन, 62 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट तथा 4.5 प्रतिशत वसा होती है। चना का उपयोग मुख्यतः दाल, बेसन, सत्तू, व्यंजन तथा मिठाई बनाने में होता है। चने का भूसा कहरे व दाना के रूप में पशुओं के आहार में इस्तेमाल किया जाता है। चना दलहनी फसल होने के कारण वातावरण से नाइट्रोजन एकत्र कर भूमि की उर्वरा शक्ति भी बढ़ाता है। भूमि - चने की खेती के लिए हल्की दोमट या दोमट मिट्टी अच्छी होती है। भूमि में जल निकास की उपयुक्त व्यवस्था होनी चाहिए। बीज उपचार - चने को अनेक प्रकार की कीट एवं बीमारियाँ नुकसान पहुँचती हैं। इनके प्रकोप से फसल को बचाने के लिए बीज उपचारित करके ही बुआई करनी चाहिए। जड़

गलन व उखटारोग की रोग थाम के लिए बीज को मेन्कोजेब या थाईरम की 2 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीज की दर से उचारित करें। दीमक एवं अन्य भूमिगत कीटों की रोकथाम हेतु क्लोरोपाईरीफोस 20 ईसी 8 मिलीलीटर मात्रा प्रति किलो बीज दर से उपचारित करके बुआई करनी चाहिए।

बुआई का समय एवं बुआई -

30 kg प्रति एकड़ की दर से बीज का उपयोग करें। अधिक उत्पादन हेतु चना की खेती लाईन में बुआई करनी चाहिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45 सेमी पर करनी चाहिए।

खाद एवं उर्वरक - चने की फसल दलहनी होने के कारण इसकी नाइट्रोजन की कम आवश्यकता होती है क्योंकि चने के पौधों की जड़ों में ग्रन्थियाँ पायी जाती हैं और इन ग्रन्थियों में उपस्थित जीवाणु वातावरण की नाइट्रोजन का जड़ों में स्थिरीकरण करके पौधों की

नाइट्रोजन की काफी मात्रा की आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। NPK 20 : 40 : 20 की आवश्यकता होती है।

सिंचाई - सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो तो नमी की कमी होने की स्थिति में एक या दो सिंचाई की जा सकती हैं। पहली सिंचाई 40 - 50 दिनों बाद तथा दूसरी सिंचाई फलिया आने पर की जानी चाहिए। सिंचित क्षेत्रों में चने की खेती के लिए 3 से 4 सिंचाई पर्याप्त होती है।

खरपतवार नियंत्रण - चने की फसल में अनेक प्रकार के खरपतवार जैसे बथुआ, खरतुआ, मोरवा, प्याजी, मोथा, दूब इत्यादि उगते हैं। ये खरपतवार फसल के पौधों के साथ पोषक तत्वों नमी स्थान एवं प्रकाश के लिए प्रतिस्पर्धा करके उपज को प्रभावित करते हैं। फसल बुआई के तुरंत पश्चात् पिंडीमैथालिन की 1 लीटर मात्रा 200 लीटर पानी में घोल कर खेत में समान रूप से छिड़काव करें।

प्याज की वैज्ञानिक खेती

प्याज का प्रभेद	पूसा रेड, पूसा रत्नागर, पूसा माधवी, अरका निकेतन, एग्री फाउनड लाइट रेड, पंजाब रेड राउंड, कल्याण रेड राउंड
भूमि	प्याज की बागवानी हेतु भूमि जीवाश्म युक्त हल्की दोमट मिट्टी सबसे अच्छी है।
बीज की मात्रा	4-5 kg प्रति एकड़ पर्याप्त रहता है।
नर्सरी डालने का समय	अक्टूबर - नवम्बर
खेत में रोपाई का समय	दिसम्बर - जनवरी
खाद एवं उर्वरक की मात्रा	गोबर की खाद 5 टन, 60 किलो फास्फोरस एवं 30 किलो पोटाश प्रति एकड़ देने की अनुशंसा की गया है। नाइट्रोजन का प्रयोग तीन बार करें और वह भी सिंचाई के बाद स्फुर एवं पोटाश की पूरी मात्रा खेत तैयारी के समय ही दी जाय
निराई गुड़ाई एवं सिंचाई	प्याज एक ऐसी फसल है जिसमें विचड़े की रोपनी के बाद यानि जब पौधे स्थिर हो जाते हैं तब इसमें निकौनी एवं सिंचाई की आवश्यकता पड़ती रहती हैं। फसल में जब भी नमी की कमी हो कई बार हल्की सिंचाई करते रहें।
रोग प्रबन्धन	समय समय पर पौधों की निगरानी करें और कृषि वैज्ञानिकों के उचित परामर्श लेते रहें।
भंडारण	सूखे कंदों को हलको मिट्टी के ऊपर फैलाकर रखते हैं इसे अनुकरण से बचाव के लिए मौलिक हाइड्रोजाइड नामक रासायनिक दवा का (1000से 1500 पी.पी.एम.) छिड़काव कर देते हैं।



अनुसंधान के झरोखे से

मैदानी क्षेत्रों में सेब की बागवानी हेतु कुछ प्रजाति विकसित हो गयी है , अन्ना, एचआर एमएन 99 आदि

बिहार के लिए संस्तुति चना की नवीन प्रजाति पूसा 3043 (देसी)।

कृषि के क्षेत्र में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का उपयोग कर कीट और खरपतवारों पर नियंत्रण किया जायेगा।

मक्के से बने ईंधन से गाड़ियां चलेंगी

महत्वपूर्ण सूचनाएं -

हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र में मिट्टी जाँच की सुविधा निर्धारित शुल्क पर उपलब्ध है किसान भाई मिट्टी नमूना अपने खेत से लेकर उसकी जाँच कराएं तथा उर्वरक की संस्तुत मात्रा ही अपने फसल में प्रयोग करें।

परिवर्तन पोली हॉउस में विभिन्न प्रकार के सब्जी के पौधे उचित मूल्य पर उपलब्ध कराये जाते हैं किसान भाई इसका लाभ उठाएं।

मिट्टी पलट वाले हल , जिरोटिल मशीन, रेज्ड बेड प्लान्टर, रिज प्लान्टर, स्प्रे आदि कृषि यंत्र उपलब्ध हैं। किसान भाई इन यंत्रों से अपनी खेती की तैयारी तथा फसल बुआई कर सकते हैं।

जन हितार्थ परिवर्तन किसान उत्पाद कम्पनी के किसान सेवा केंद्र से जुड़कर उन्नतशील किस्म के बीज, उर्वरक, पशुआहार, कृषि रसायन, जैव उर्वरक,

कृषि इनपुट, बाजार की उपलब्धता आदि सेवाएँ प्राप्त कर सकते हैं।

सहयोगी संस्थाएं -

सीरियल सिस्टम इनिशिएटिव फॉर साऊथ एशिया (सीसा) पटना

भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान क्षेत्रीय केंद्र, पूसा समस्तीपुर

भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद , रिसर्च काम्प्लेक्स, पूर्वी क्षेत्र पटना

डा. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा समस्तीपुर

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर भागलपुर

हार्वेस्टप्लस क्षेत्रीय स्टेशन, पटना



संपर्क सूत्र
श्री विवेक कुशवाहा

(कृषि सलाहकार)

7236008395

श्री बलिन्द्र यादव

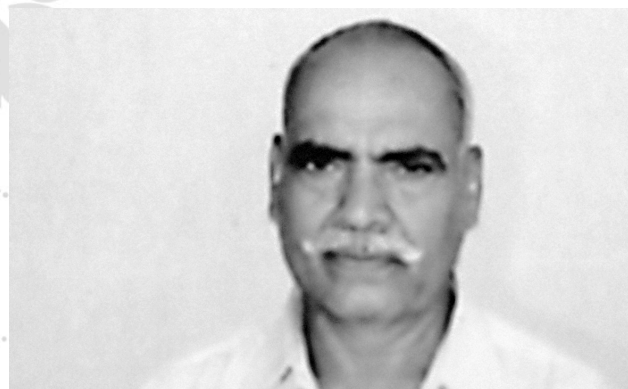
(कृषि सहायक)

7759931043

संबोधन - किसानों की सफल कहानी

मै मनन यादव ग्राम संथू का निवासी हूँ। परिवर्तन से मैं 2013 से जुड़ा हूँ। मुझे परिवर्तन कृषि इकाई से बहुत फायदा हुआ है। परिवर्तन से सूखा अवरोधी, कम दिन में पकने वाली प्रजाति और गेहूँ की नई प्रजाति DBW 187 को लेकर खेती किया, काफी अच्छा रहा। हमारी खेती अच्छी होती देख काफी लोग प्रभावित हुए। परिवर्तन से जुड़ने के उपरांत मैं किसान क्लब का कोषाध्यक्ष रहा साथ ही क्लब की गतिविधियों में शामिल भी रहा। क्लब से किसानों को जोड़कर कर खेती को अधिक लाभकारी बनाने का भी कार्य किया जिससे किसानों में सहभागिता रहे।

-मनन यादव



मै हीरा सिंह ग्राम नरेन्द्रपुर प्रखंड जीरादेई जिला सिवान का निवासी हूँ। मै परिवर्तन की कृषि इकाई से 4 साल से जुड़ा हूँ जहाँ से मुझे समय समय पर कृषि तकनीकी जानकारी प्राप्त होती है। मै परिवर्तन में आयोजित कार्यशाला और गोष्ठी में नियमित भाग लेता रहता हूँ। परिवर्तन किसान सेवा केंद्र से उच्च गुणवत्ता के बीज उपलब्ध होने से हमारी उपज में बढ़ोतरी हुई है। मैने परिवर्तन के सहयोग से एक अच्छा सा बगीचा भी लगाया है।

-हीरा सिंह

